Date
09.05.20

B.Ed-I

Sub - Philosophical & Sociological perspectives of Education.

सुकरात [469-399 B.C]

* आदर्शवादी दार्शनिक सुकरात के चिंतन की जानकारी इनके शिष्य प्लेटो के ग्रन्थों से मिलती है।
* ये मनुष्य को आत्मधारी और ईश्वर की श्रेष्ठ कृति मानते थे।
* इनका दर्शन अपने को पहचानो से संबन्धित था।
* सुकरात वस्तुनिष्ठ एवं सार्वभौमिक ज्ञान की स्थापना करना चाहते थे।
* ये नैतिक ज्ञान को अधिक मूल्यवान मानते थे तथा इनका मानना था कि सभी ज्ञान "प्रत्यय" द्वारा होता है।
* ये ज्ञान को ही सद् गुण मानते थे।
* ये नैतिक नियमों, सत्य, न्याय, ईमानदारी, एवं सदाचार आदि को शाश्वत मानते थे तथा सच्चे ज्ञान को ही सच्चा आचरण की कुंजी मानते थे।
* इन्होंने अपने जीवन में सबसे अधिक बल ज्ञान की प्राप्ति और नैतिक नियमों को समझने व उनका पालन करने पर दिया था।
* इनका मानना था कि विश्व का संपूर्ण ज्ञान बालक के अन्दर समाहित है इस ज्ञान के उजागर के लिए ये प्रश्नोत्तर विधि पर बल देते थे।
* सार्वभौम ज्ञान को प्राप्त करने के लिए ~~जिस~~ विधि का प्रयोग किया जाता है उसे द्वन्द्वात्मक विधि कहते हैं।
* अध्यापक को बालक में निहित ज्ञान को प्रश्नोत्तर द्वारा बाहर निकालना है।
* छात्र को सामान्य की प्राप्ति के लिए तर्क-वितर्क की क्रिया में दक्ष हो और परम तत्व के ज्ञान की प्राप्ति के लिए आत्म निरीक्षण के लिए आत्म निरीक्षण की क्रिया में दक्ष हो।
* ये आत्मप्रेरित अनुशासन के पक्षधर थे।

Scanned with CamScanner